SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

बीरेन्द्र कुमार चौरसिया, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
मां विंध्यवाशिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पद्मा, हजारीबाग, झारखंड़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

बीरेन्द्र कुमार चौरसिया, (Ph.D.), शिक्षा विभाग, मां विंध्यवाशिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पद्मा, हजारीबाग, झारखंड़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/01/2022
Revised on : -----
Accepted on : 31/01/2022
Plagiarism : 06% on 25/01/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 6%

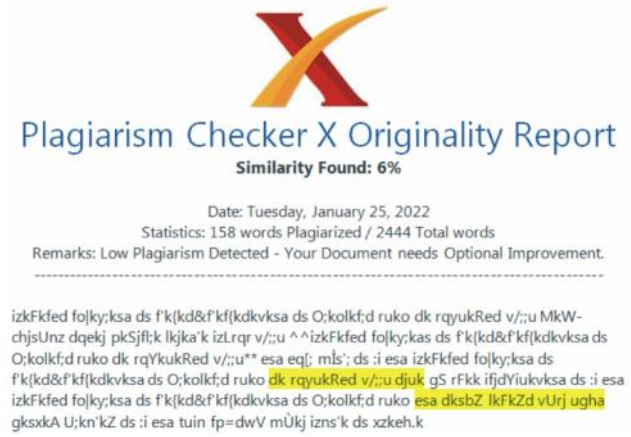

Date: Tuesday, January 25, 2022
Statistics: 158 words Plagiarized / 2444 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

izkFkfed fo|ky;ksa ds f'k{kd&f'kf{kdkvksa ds O;kolkf;d ruko dk rqyukRed v/;;u MkW-chjsUnz dqekj pkSjfl;k lkjka'k izLrqr v/;;u ^^izkFkfed fo|ky;kas ds f'k{kd&f'kf{kdkvksa ds O;kolkf;d ruko dk rqYkukRed v/;;u** esa eq[; mís'; ds :i esa izkFkfed fo|ky;ksa ds f'k{kd&f'kf{kdkvksa ds O;kolkf;d ruko dk rqyukRed v/;;u djuk gS rFkk ifjdYiukvksa ds :i esa izkFkfed fo|ky;ksa ds f'k{kd&f'kf{kdkvksa ds O;kolkf;d ruko esa dksbZ lkFkZd vUrj ugha gksxkA U;kn'kZ ds :i esa tuin fp=dwV mÙkj izns'k ds xzkeh.k

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन ''प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन'' में मुख्य उद्देश्य के रूप में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है तथा परिकल्पनाओं के रूप में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा। न्यादर्श के रूप में जनपद चित्रकूट उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के 25 शिक्षकों व 25 शिक्षिकाओं तथा शहरी क्षेत्र के 25 शिक्षकों व 25 शिक्षिकाओं को, इस प्रकार कुल 100 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। शोधकर्ता ने अपने इस शोध कार्य में वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग करके जो परिणाम प्राप्त किए हैं उनकी वैधता की कसौटी के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए हैं। शोधार्थी ने अपने शोध कार्य हेतु व्यवसायिक तनाव मापनी ए. के. श्रीवास्तव एवं ए.पी. सिंह द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया है। शोध पत्र के निष्कर्ष में प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द

परिकल्पना, न्यादर्श, गत्यात्मक, अनुसंधान, यादृच्छिकी, वर्णात्मक.

प्रस्तावना

प्रत्येक समाज अपने सदस्यों की शिक्षा का दायित्व स्वयं अपने ऊपर लेता है। वह इस दायित्व का निर्वाह अनेक प्रकार के शिक्षा साधनों से पूरा करने का प्रयास करता है। विद्यालय भी इसी दायित्व को पूरा करने का

एक साधन है। जॉन डी.वी. ने लिखा है कि–''विद्यालय की चाहरदीवारी के बाहर वृहद समाज की प्रतिबिम्ब है, जिसमें जीवन को जीवन व्यतीत करके सीखा जा सकता है, परन्तु यह एक शुद्ध, सरलकृत तथा उत्तम रूप में समाज होगा''। समाज में विद्यालय के स्थान महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए एस. बाल कृष्ण जोशी ने लिखा है कि ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधान सभाओं, न्यायलयों और फैक्ट्रियों में नहीं वरन् विद्यालयों में होता है।'' वास्तव में व्यक्ति एवं समाज दोनों की प्रगति के लिए विद्यालय अति आवश्यक है इसलिए किसी भी सामाजिक ढांचे में इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति शिक्षक होता है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, पाठ्यपुस्तकें आदि सभी वस्तुएं शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। परन्तु जब तक उनमें अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जायेगी तब तक वे निरर्थक रहेंगी। शिक्षक ही वह शक्ति है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लांघकर विश्व–व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है।

मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है। शिक्षक किसी भी शिक्षण संस्थान का प्रमुख स्तम्भ होता है। हुमायूँ कबीर का कथन है कि ''वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य निर्णायक हैं। यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है, परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है, कि शिक्षक के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है। यह शिक्षक की योग्यता ही है जो कि निर्णायक है।'' हुमायूँ कबीर ने आगे लिखा है कि ''शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि–''अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक–उसके व्यक्तिगत गुण, उनकी शैक्षिक योग्यताएँ, उनका व्यवसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता ही है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसंदेह रूप से शिक्षकों है जो उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं।''

इस प्रकार शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा पद्धति में स्पष्ट है। वस्तुतः शिक्षा उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान एवं पतन का भार है। आदर्श शिक्षक मनुष्यों का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि सब कुछ माना गया है।

प्राथमिक विद्यालय में तो शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। प्राथमिक विद्यालय के छात्र पूर्णतः शिक्षक पर आधारित होते हैं। शिक्षक प्रक्रिया का निर्माण करने वाला होता है तथा इस स्तर पर शिक्षक का व्यक्तित्व छात्र को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। अब समय आ गया है जब शिक्षक खुद यह महसूस करें कि उनके विकास में ही छात्र का विकास निहित है। अब आवश्यकता महसूस की जा रही है कि शिक्षक अपनी व्यवसायिक कौशलों का विकास करें। शेरी (1964) ने अपने अनुसंधान में शिक्षण प्रक्रिया की सफलता के लिए कुछ कौशलों का उल्लेख किया। लेकिन यह तभी सम्भव है जब शिक्षक तन–मन तथा धन से अपने कार्य के प्रति समर्पित हों।

मानव जीवन दिन–प्रतिदिन व्यस्तता की ओर बढ़ता जा रहा है। व्यस्तता के कारण मानव में तमाम तरह की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। ये समस्याएं व्यक्ति में तनाव उत्पन्न करने लगते हैं। यह तनाव मनुष्य के प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या है। मनोवैज्ञानिक तनाव के कारण व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर पड़ जाता है। तब एक शिक्षक इस समस्याओं से ग्रसित होता है तो निश्चय ही शिक्षण–प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो जाता है तथा इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगते हैं जिससे शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। प्रभावशीलता में यह कमी शिक्षक में तनाव के कारण हो सकती है।

इस संबंध में हुए कुछ अध्ययनों के परिणाम यह दर्शाते हैं कि व्यवसायिक तनाव का शिक्षक के कक्षागत

व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। बर्नियूँ ने 1982 के अपने शोध में यह परिणाम पाया कि ''उच्च तनाव में अध्यापक छात्रों की आवश्यकता को प्रभावशाली ढंग से पूरा नहीं कर पाते।'' तनाव एवं प्रतिबल के संबंध में हुए शोध अध्ययन में डॉ. टी. सी. ज्ञानानी (1998) के परिणाम दर्शाते हैं कि ''उच्च शिक्षा में संलग्न शिक्षकों के कार्य पर तनाव व प्रतिबल का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।''

मिश्रा (1991) ने प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव में संस्थागत संघर्ष तथा उनके व्यक्तिगत में बर्न आउट के बीच अंतः संबंध पर अध्ययन किया। 200 प्राथमिक स्कूल शिक्षकों पर ''रमीह'' द्वारा निर्मित ''आर्गेनाइजेशनल कानफिलक्ट इन्वेटरी'' को प्रशासित किया गया। इन्होनें अपने अध्ययन के लिए माशलों द्वारा निर्मित ''बर्न आउट इन्वेटरी, रूटर द्वारा निर्मित, आई–ई लोकस ऑफ कन्ट्रोल'' तथा इन्हीं की खुलेशरी वाली कोपिंग विहैवियर क्वेश्चनायर का भी प्रयोग किया। अनुसंधानकर्ता ने विश्लेषण में ANOVA परीक्षण तथा काई–वर्ग परीक्षण अपनाया तथा निम्न निष्कर्ष पाया गया कि व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार तथा संस्था का प्रबंधन तनाव संबंधित व्यवहार को नियंत्रित करने तथा भूमिका संघर्ष को कम करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

सुल्ताना (1995) ने व्यावसायिक एवं अव्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत् महिला तथा पुरूष अध्यापकों में समूह पर O.R.S स्केल (पारीक,1983) को प्रशासित किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि:

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत् महिला तथा पुरूष अध्यापकों में व्यावसायिक तनाव संबंधित निम्न क्षेत्रों में सार्थक अंतर पाया गया:
   (क) अत्यधिक कार्य–भार (ख) अपनी भूमिका संबंधित अनिश्चितता।
2. अव्यवसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत महिला तथा पुरूष अध्यापकों में व्यवसायिक तनाव संबंधित निम्न क्षेत्रों में सार्थक अंतर पाया गया:
   (क) अपेक्षाएं (ख) भूमिका संघर्ष (ग) अपर्याप्तता (घ) अपनी भूमिका संबंधित अनिश्चितता।
3. व्यवसायिक व अव्यवसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत् महिला तथा पुरूष शिक्षिकाओं में व्यवसायिक तनाव के कई क्षेत्रों में सार्थक अंतर पाया गया।

पीथर्स एवं फोगार्टी (2005) ने व्यवसायिक शिक्षकों में तनाव का अध्ययन किया। इन्होनें अपने अध्ययन में 83 अध्यापकों (45 पुरूष तथा 38 महिला) तथा 71 अन्य व्यवसाय तथा रोजगार से संबंधित (34 पुरूष तथा 37 महिला) व्यक्तियों को अपने न्यादर्श के रूप में चुना। शोध कार्य में ओसिपाऊ तथा स्पोकेन (1987) द्वारा निर्मित ''आकुपेशनल स्ट्रेश इन्वेटरी O.S.I. उपकरण का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण ANOVA परीक्षण द्वारा किया गया तथा निष्कर्ष रूप में पाया गया कि:

1. शिक्षकों में गैर–शिक्षकों की अपेक्षा अधिक व्यवसायिक तनाव पाया गया।
2. शिक्षकों में गैर–शिक्षकों की अपेक्षा O.S.I. स्केल के उपस्केल अत्यधिक कार्य भार तथा जिम्मेदारी पर अधिक अंक पाये गये।
3. पुरूष अध्यापकों में महिला अध्यापकों की अपेक्षा अधिक तनाव पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नवत् उद्देश्य हैं:

1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

शोधार्थी ने अपने शोध पत्र में शून्य परिकल्पना को चुना है। अनुसंधान के लिए शून्य परिकल्पना सर्वोत्तम होती है:

1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमांकन

1. अध्ययन में जनपद चित्रकुट (उ.प्र.) के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक 50 शिक्षकों एवं 50 शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।
2. यह शोध अध्ययन केवल जनपद चित्रकुट उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।

शोध विधि

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका संबंध जनपद चित्रकुट उत्तर प्रदेश के शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के सर्वेक्षण, आंकड़ों का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, विश्लेषण एवं व्याख्या के स्तर से है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता के द्वारा यादृच्छिकी न्यादर्श विधि के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है। शोधकर्ता द्वारा जनपद चित्रकुट उत्तर प्रदेश के शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। जनपद चित्रकुट उत्तर प्रदेश के शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शोधकर्ता ने लाटरी विधि का प्रयोग करते हूए कुल 10 शहरी तथा 10 ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों को अपने शोध कार्य हेतु चुना है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

इस अध्ययन हेतु शोधकर्त्री ने व्यवसायिक तनाव मापनी ए. के. श्रीवास्तव एवं ए.पी. सिंह द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन शोधकर्त्री ने आंकड़ों का आंकलन कर टी–मान प्राप्त करके निष्कर्ष प्राप्त किया है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्यख्या

शोधकर्ता ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए उनका विश्लेषण किया गया है। शोधार्थी ने आंकड़ों की गणना हेतु सर्वप्रथम प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर प्रत्येक चर का मध्यमान ज्ञात किया, इसके पश्चात् प्राप्त मध्यमान के आधार पर प्रमाणिक विचलन निकाला, तत्पश्चात् प्राप्त मध्यमान के आधार पर प्रमाणिक विचलन निकाला, तत्पश्चात् शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के चर का तुलनात्मक अध्ययन हेतु टी–मान का प्रयोग किया।

प्राप्त परिणामों का सारणीय व उनकी व्याख्या निम्न प्रकार हैः

तालिका 01

क्र. सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	शिक्षक	50	132.30	16.77	2.36	1.61	N.S.
02	शिक्षिकाएं	50	136.12	16.62			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का परीक्षण प्राप्तांक का मध्यमान क्रमशः 132.30 व 136.12 तथा मानक विचलन 16.77 व 16. 62 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अंतर पाया गया, यह अंतर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 1.61 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मानों

1.96 व 2.96 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना सं. 01 ''प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है,'' –स्वीकृत की जाती है।

प्राथमिक विद्यालयों के ग्रमीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण हो सकता है कि सांख्यिकी के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों का व्यवसायिक तनाव मान शिक्षिकाओं के तुलना में मध्यमान कम तथा मानक विचलन अधिक पाया गया परंतु तुलनात्मक रूप में प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का कार्य तनाव समान रूप में पाया गया।

तालिका 02: प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	शिक्षक	50	135.71	15.68	2.15	0.93	N.S.
02	शिक्षिकाएं	50	137.20	14.74			

N.S. असार्थक

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव का परीक्षण प्राप्तांक का मध्यमान क्रमशः 135.71 व 137.20 तथा मानक विचलन 15.68 व 14. 74 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अंतर पाया गया। यह अंतर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 0.93 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मानों 1.96 व 2.96 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना सं. 02 ''प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' –स्वीकृत की जाती है।

प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण हो सकता है कि सांख्यिकी के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों का व्यवसायिक तनाव मान शिक्षिकाओं के तुलना में मध्यमान कम तथा मानक विचलन अधिक पाया गया, परंतु तुलनात्मक रूप में प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का कार्य तनाव समान रूप में पाया गया।

निष्कर्ष

1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यवसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संदर्भ सूची

1. सिद्दीकी एम. एच. (2004) के टेक्नोलॉजी इन टीचर एजुकेशन, नई दिल्लीरू ए. पी. एच. पब्लिशिंग कार्पोरेशन।
2. सिंह, अरूण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, पटनारू भारती भवन।
3. सिंह, अरूण कुमार, (2005) आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, पटनारू मोतीलाल बनारसरीदास।
4. सिंह, अरूण कुमार, (2006) मनोविज्ञान, समाजशास्तत्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटनारू मोतीलाल बनारसरीदास।
5. कपिल, एच.के.(2004) अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा।
6. गैरिट, हेनरी ई, (1989) शिक्षा और मनोविज्ञान में संख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
7. गुप्ता, एस.पी. अप्रैल (1983) ए स्टडी ऑफ जॉब सैटिसफैक्शन एट थ्री लेवल्स ऑफ टीचिंग, इण्डियन एजूकेशन रिव्यू, वाल्यूम–18, पृष्ठ–75–78
8. मिश्रा के.एन. (1991) इण्टर रिलेशनशिप बिटवीन ऑर्गेनाइजेशनल कॉन्फ्लिक्ट इन स्कूल टीचर स्ट्रेश एण्ड बर्न आउट इन रिलेशन टू टीचर्स पर्सनालिटि एट प्राइमरी लेवल, इन एम.बी. बुच (एजु) फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–प्, पृष्ठ–908, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी.।
9. नारंग, संध्या (1992) अ स्टडी आन वूमन प्राइमरी टीचर्स इन देहलीरू देयर रोल कॉन्फ्लिक्ट, परसेप्सन ऑफ एकाउण्टेबिलिटी एण्ड प्रोफेशनल रिचर्स, वालयू– प्, पृष्ठ–1461, न्यू देहली, एन.सी. ई.आर.टी.।
10. कॉपर, सी. एल. तथा केली एम. (1993) ऑकुपेशनल स्ट्रेश इन हेड टीचर्स , ए नेशनल, यू. के. स्टडी, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकेशनल साइकोलाइज, वाल्यूम–66, पृष्ठ सं0–130'–143, टूण्मतपबमकनण्हवअण्पद
11. हॉग, गलेण्डा एम. जेम्स, जे. तथा टेलर जे. (1994) बर्न आउट इन म्यूजिक एण्ड मैथेमैटिक्स टीचर्स, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकेशनल साइकोलॉजी, वॉल्यूम–64, पृष्ठ सं0–645–75, टूण्मतपबमकनण्हवअण्पद
12. सुल्ताना, ए. (1995) ए स्टडी ऑफ ऑकुपेशनल स्ट्रेश एमंग वर्किंग वूमन इन रिलेशन टु पर्सनैलिटि पैटर्न एण्ड सर्टेन डेमोग्राफिक वैरिएबुल, पी–एच. डी. थीसिस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
13. पीथर्स, आर. टी. एण्ड फोगार्टी जे. जे. (2005) ऑकुपेशनल स्ट्रेश एमंग वोकेशनल टीचर्स, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकेशनल साइकोलॉजी, पृष्ठ 3–14 ।

****